शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों एवं विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

अनिता स्वामी

सहायक आचार्य, रघुकुल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जयपुर

Corresponding Email: anitaswami25@gmail.com

सारांश —

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक-प्रशिक्षक महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों एवं विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवस्था के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक होने के कारण सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में शोध के समकों के संकलन हेतु जयपुर शहर के शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थी व कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापकों का उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के आधार पर चयन किया गया, जिनकी संख्या है 300 जिनमें से 200 प्रशिक्षणार्थी व 50 प्रशिक्षित व 50 अप्रशिक्षित अध्यापक हैं। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी को प्रयोग में लिया गया। शोध से प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ है कि प्रशिक्षणार्थियों व अध्यापकों (प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित) की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्दावली — शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित अध्यापक, अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति।

प्रस्तावना—

अध्यापक ही वह व्यक्ति होता है जो बालकों के व्यवहार में परिवर्तन लाता है, अध्यापक ही बालक का सर्वांगीण विकास करता है। बालक परिवार के बाद विद्यालय में आकर शिक्षक के सम्पर्क में आता है और वह अपनी माँ के बाद

सबसे ज्यादा शिक्षक पर विश्वास करने लगता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। लेकिन वर्तमान में

बदलते परिवेश, भौतिकता के प्रति आकर्षण और भारतीय शिक्षा पर पाश्चात्य प्रभाव का परिणाम है कि वर्तमान में अध्यापकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण बदलने लगा है जो कि शिक्षण व्यवस्था के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अध्ययन अध्यापन संस्थियों में सुधार ला सकता है।

समस्या का औचित्य –

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में अध्यापक का मुख्य स्थान होता है अध्यापक ही विद्यार्थियों को ज्ञान देता है, तथा उनके व्यवहार में परिवर्तन लाता है। इस परिवर्तन हेतु अध्यापक में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना आवश्यक है अन्यथा बालकों में अपेक्षित व्यवहार-गत परिवर्तन लाना कठिन है। आज अध्यापकों ने अपनी गरिमा को भूला दिया है शिक्षण कार्य को कर्तव्य न मानकर मात्र धनोपार्जन का साधन मानते हैं योग्य व्यक्ति शिक्षण कार्य की तरफ आकर्षित नहीं होते। अतः अध्यापन व्यवसाय के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण जैसा है। ये अपने कार्यों को कितनी निष्ठापूर्वक करते हैं या केवल आजीविका का साधन मानते हैं ये जानने के लिए शोधकर्त्री ने इस विषय को अपने शोध का विषय बनाया है।

समस्या का उद्देश्य –

1. शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अध्ययन-अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित प्रशिक्षित अध्यापकों व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना –

1. शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. विद्यालय में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध सीमाएँ –

1. अध्ययन के लिए केवल जयपुर में चलने वाले विद्यालय एवं प्रशिक्षण महाविद्यालयों को ही लिया गया है।
2. अध्यापन – व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण की अभिवृत्ति मापनी स्वयं निर्मित है।

शोध विधि – इस लघु शोध के अध्ययन के लिए सामान्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – जयपुर शहर के 300 अध्यापक व प्रशिक्षणार्थी (200 प्रशिक्षणार्थी, 50 कार्यरत अप्रशिक्षित व 50 कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक)।

उपकरण –

शोधकर्त्री द्वारा निर्मित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी – सांख्यिकी के रूप में मध्यमान मानक विचलन, ज टेस्ट परिक्षण का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं परिणाम –

परिकल्पना – 1 : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान
महिला	100	270.85	24.26	2.36
पुरुष	100	264.13	14.75	

डी.एफ. (198) सार्थकता .05 स्तर पर (1.96)

उपर्युक्त सांख्यिकी सारणी में स्पष्ट है कि दोनों समुहों के मध्य 'टी' का मान 2.36 प्राप्त हुआ। यह मान निर्धारित डी. एफ. (198) के सार्थकता स्तर .05 के 196 से अधिक है। इसका अभिप्राय है कि सम्बन्धित शून्य परिकल्पना "शिक्षण – प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" .05 पर अस्वीकृत होती है।

सा. स. 1 में प्रथम समुह (महिला प्रशिक्षणार्थी) का मध्यमान द्वितीय समुह (पुरुष प्रशिक्षणार्थियों) से अधिक है। अतः निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला प्रशिक्षणार्थियों में पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अध्ययन व्यवसाय के प्रति उच्च अभिवृत्ति पाई जाती है।

परिकल्पना – 2 : विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान
प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ	25	259.16	51.55	1.113
प्रशिक्षित अध्यापक	25	270.88	10.71	

डी.एफ. (48) सार्थकता .05 स्तर पर (2.01) उपर्युक्त सांख्यिकी सारणी में स्पष्ट है कि दोनों समुहों के मध्य 'टी' का मान 1.113 प्राप्त हुआ है।

यह मान निर्धारित डी. एफ. 48 के सार्थकता स्तर .05 के 2.01 से कम है इसका अभिप्राय है कि सम्बन्धित शून्य परिकल्पना विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है .05 स्तर पर स्वीकृत होती है। सारणी में प्रथम समुह (प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ) व द्वितीय समुह (प्रशिक्षित अध्यापक) के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः निष्कर्ष प्राप्त होता है कि विद्यालयों में प्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 3 : विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान
अप्रशिक्षित अध्यापिकाएँ	25	252.28	17.93	1.67
अप्रशिक्षित अध्यापक	25	262.72	25.51	

डी.एफ. (48) सार्थकता .05 स्तर पर (2.01) उपर्युक्त सांख्यिकी सारणी में स्पष्ट होता है कि दोनों समुहों के मध्य 'टी' का मान 1.67 प्राप्त होता है। यह मान निर्धारित डी. एड. 48 के सार्थकता स्तर .05 से 2.01 से कम है। इसका अभिप्राय है कि सम्बन्धित शून्य परिकल्पना

“विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। .05 स्तर पर स्वीकृत होती है। उपर्युक्त सारणी में प्रथम समुह (अप्रशिक्षित अध्यापिकाएँ) व द्वितीय समुह (अप्रशिक्षित अध्यापक) के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः निष्कर्ष प्राप्त होता है कि विद्यालयों में कार्यरत अप्रशिक्षित अध्यापकों व अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 4 : विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान
प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ	25	270.88	10.71	1.47
अप्रशिक्षित अध्यापक	25	262.72	25.51	

डी.एफ. (48) सार्थकता .05 स्तर पर (2.01) उपर्युक्त सांख्यिकी सारणी में स्पष्ट है कि दोनों समुहों के मध्य 'टी' का मान 1.47 प्राप्त हुआ है यह मान निर्धारित डी. एफ. 48 के सार्थकता स्तर .05 के 2.01 से कम है। इसका अभिप्राय है कि सम्बन्धित शून्य परिकल्पना “विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापकों व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थ

अन्तर नहीं है।" .05 स्तर पर स्वीकृत होती है। उपर्युक्त सारणी में प्रथम समुह व द्वितीय समुह के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् अध्यापकों के अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को अध्यापकों का प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित होना प्रभावित नहीं करता।

परिकल्पना- 5 : विद्यालय में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान
प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ	25	259.16	57.55	0.63
अप्रशिक्षित अध्यापिकाएँ	25	252.28	15.93	

डी.एफ. (48) सार्थकता .05 स्तर पर (2.01) उपर्युक्त सांख्यिकी सारणी में स्पष्ट है कि दोनों समुहों के मध्य 'टी' का मान 0.63 प्राप्त हुआ है यह मान निर्धारित डी. एफ. 48 के सार्थकता स्तर .05 के 2.01 से क्रम है। इसका अभिप्राय है कि सम्बन्धित शून्य परिकल्पना "विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" दोनों ही स्तर पर स्वीकृत होती है। सारणी में प्रथम समुह (प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ) व द्वितीय समुह (अप्रशिक्षित अध्यापिकाएँ) के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् अध्यापिकाओं के अध्यापन व्यवसाय के प्रति

अभिवृत्ति को इनका प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित होना प्रभावित नहीं करता।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनार्थियों पर ही किया गया है। महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सन्दर्भ में यह अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन अध्यापक अभिवृत्ति पर किया गया है। अन्य अध्ययन अध्यापकों के व्यवहार पर किया जा सकता है।
3. अध्ययन अन्य स्थानों को लेकर उनकी तुलना करते हुए किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भार्गव, महेश (2004), आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा : एच सी भार्गव बुक हाउस।
2. चौबे एस. पी. (1956), एजुकेशनल फॉर इण्डिया, नई दिल्ली : आत्माराम एण्ड सन्स।
3. गुप्ता, एस.पी. (1990), भारतीय शिक्षा तथा उनकी समस्याएँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
4. प्रसाद, जनार्दन (2005) एजुकेशन एण्ड द टीचर, नई दिल्ली : कनिष्का पब्लिकेशंस डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. कपिल, एच. के. (2003), अनुसंधान विधियाँ, आगरा : पुस्तक भवन।